# वाह रे! बोर्ड परीक्षाफल

मोईनुद्दीन ख़ान*

*हम सब जानते हैं कि विद्यार्थियों के भविष्य के निर्माण में कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम विशेष महत्व रखते हैं। इन बोर्ड परीक्षाओं में अभिभावक अपने बच्चों के परीक्षा परिणामों को लेकर बहुत चिंतित व सतर्क रहते हैं। परीक्षा के परिणामों का इंतज़ार बच्चे तथा बच्चों के घरवालों के साथ-साथ रिश्तेदार और पड़ोसी भी करते नज़र आते हैं। ये परीक्षा परिणाम बच्चों के साथ-साथ अभिभावकों के लिए भी सम्मान का विषय बन जाते हैं। इसलिए बच्चा परीक्षा और परिणामों, दोनों को लेकर तनाव में रहता है। कभी-कभी ऐसा भी देखने में आता है कि बच्चे अनुमान से कहीं ज़्यादा अंक प्राप्त कर लेते हैं, तो वहीं कुछ बच्चों को लगता है कि (कभी-कभी कम अंक अधिक प्राप्ति की स्थिति में) उनके साथ अन्याय हुआ है। इस पहेली को सुलझाना बहुत मुश्किल है, क्योंकि यह सब मूल्यांकन पद्धति पर निर्भर करता है। लेकिन एक बात समझ नहीं आती है कि ये कैसे पता चलेगा कि कितने अंक एवं प्रतिशत हासिल करने पर बच्चा सफल कहलाएगा? जहाँ तक मैंने (लेखक ने) देखा है कि इन अंकों एवं प्रतिशतों की सीमा रेखा दशकों के साथ आगे खिसकती जा रही है। अब कौन इसे खिसका रहा है? यह बताना मुश्किल होगा। बच्चों द्वारा प्राप्त प्रतिशत की रेखा पिछले कुछ दशकों से जिस तेज़ी से ऊपर की ओर बढ़ती जा रही है, वह सभी का ध्यान अपनी ओर खींचती है। लेकिन चिंतन का विषय यह है कि पहले ऐसा क्यों नहीं था? बच्चे बदल गए या मूल्यांकन करने वाले या परीक्षा प्रणाली? इसी सवाल, इसके महत्व, वर्तमान समय के मूल्यांकन और परीक्षा परिणामों को मैंने (लेखक ने) इस लेख में एक काल्पनिक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साथ ही, इस परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सकारात्मक सुधार हेतु शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों को हल स्वरूप प्रस्तुत किया है।*

यह सच है कि बच्चों के चेहरे की मुस्कान और उदासी की एक बड़ी वजह उनके परीक्षा परिणाम हैं। बेहतर प्रदर्शन (यहाँ प्राप्तांकों की बात हो रही है) उन्हें उछलने को उत्साहित करता है, तो वहीं खराब प्रदर्शन बच्चों को हताश व निराश होने पर मजबूर कर देता है। कई बार तो शानदार प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी भी बेहद गलत कदम उठा लेते हैं, क्योंकि उन्होंने अभिभावकों की उम्मीद से कम अंक प्राप्त किए होते हैं। अब प्रश्न ये उठते हैं कि—

- कैसे ज्ञात हो कि कौन-सा प्रदर्शन बेहतर है?
- कितना प्राप्तांक श्रेष्ठ श्रेणी में आएगा?
- अधिकतम कितना प्राप्तांक मिल सकता है?
- मानक क्या हों?
- मूल्यांकन के पश्चात विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226007

प्राप्तांकों में पिछले कुछ दशकों और वर्तमान में इतना अंतर क्यों?

- बच्चों को कैसे ज्ञात हो कि प्राप्तांक इतना ही होना चाहिए?
- क्या हम मूल्यांकन प्रक्रिया में आए इस बदलाव की ओर ध्यान दे रहे हैं?

मूल्यांकन को लेकर ऐसे कई सवाल हैं, जो सोचने पर मजबूर करते हैं। चिंता का विषय यह है कि ये चलन कब से चल पड़ा है कि विद्यार्थियों के प्राप्तांकों और परीक्षा के पूर्णांकों को एकरूप बनाया जाए? अगर ऐसा है तो पहले क्यों नहीं था? कहीं ये इसके नकारात्मक परिणाम तो नहीं हैं? एक और बात ध्यान देने की है कि इस एकरूपता में (प्राप्तांक= पूर्णांक) समरूपता नहीं देखने को मिलती है अर्थात मूल्यांकन की हर इकाई (अर्थात बोर्ड) ऐसा करती नज़र नहीं आती है। फिर भी, यहाँ इस सवाल पर विचार एक काल्पनिक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है कि पहले और अब के परीक्षा परिणाम में इतना अंतर क्यों है?

## माँ की ममता बनाम परीक्षाफल का दिन

"किशनु, अरे ओ! किशनु.... ये लड़का कभी-भी सवेरे जल्दी उठता ही नहीं"। यूँ ही आवाज़ लगाते हुए और बड़बड़ाते हुए माँ ने किशनु के कमरे में प्रवेश किया, परंतु कमरे में अंदर कदम रखते ही वह अवाक रह गई। रोज़ की तरह सोते रहने के बजाय किशनु तो उदास-सा अपने बिस्तर पर बैठा मिला। माँ की झुंझलाहट मानो फुर्र हो गई, ममता का सागर उमड़ पड़ा और प्यार से बालों को सहलाते हुए कहने लगी— "क्या हुआ मेरे लाल को, नींद नहीं आई क्या"? किशनु— (धीमी आवाज़ में) नहीं, नहीं; मैं तो सोया था, बस अभी उठा हूँ।" माँ— "अच्छा, चल अब तैयार हो जा, मैं नाश्ता लगाती हूँ।" ये कहते हुए माँ कमरे से बाहर निकल गयी। आज किशनु को नींद आती भी कहाँ से? क्योंकि आज 17 मई जो ठहरी; परीक्षाफल घोषित होने का दिन। अरे! वही बोर्ड परीक्षाफल का दिन।

## नींद उड़ने की वजह

आज बोर्ड की परीक्षा का परिणाम आना था। किशनु इसी उधेड़बुन में रातभर सो नहीं सका। बेचारा पूरी रात अनुमान लगाता रहा और नंबर जोड़ता रहा एवं करवटें बदलता रहा, पर वह अपनी कल्पना में किसी भी हालत में 55 प्रतिशत प्राप्तांक से अधिक न लाँघ सका। उसने परीक्षा के लिए परिश्रम भी खूब किया था, पर हर बार और हर प्रश्न-पत्र में उसके कुछ प्रश्न छूट जाते थे। वह एक औसत छात्र था, पर वह अपनी माँ की आँखों का तारा था।

## नये दिन की शुरुआत

किशनु बिस्तर से नीचे उतरकर, बोझिल कदमों से चलता हुआ स्नान घर में चला गया। नहाने के बाद नाश्ता करते समय, बार-बार उसकी नज़र दीवार घड़ी पर जा रही थी। वह अपने मित्र अमजद के आने का इंतजार भी कर रहा था। उसने उसे आज अपने घर जल्दी बुलाया था। क्योंकि दोनों ने साथ ही परीक्षाफल देखने का निर्णय लिया था। अमजद किशनु का मित्र होने के साथ-साथ उसका पड़ोसी भी था। दोनों का एक-दूसरे के घर बे-रोकटोक आना-जाना था। अमजद की अम्मी, अमजद व किशनु को एक साथ देख लाखों दुआएँ देती, तो किशनु की माँ भी दोनों बच्चों की बलाएँ अपने सर लेते हुए ईश्वर से उनकी सलामती की प्रार्थना करती रहती।

### ये बंधन टूटे न

तभी दरवाज़े में अमजद को आता देख किशनु मुस्कुरा पड़ा। अंदर आकर उसने किशनु की माँ को प्रणाम किया और उनके इशारे पर ही किशनु के साथ बैठकर नाश्ता करने लगा। नाश्ता खत्म करके किशनु ने माँ को कहा कि— "माँ हम लोग परीक्षाफल देखने जा रहे हैं, कम्प्यूटर वाले के यहाँ"। माँ दौड़ी-दौड़ी आई और आरती की थाल से दोनों बच्चों को तिलक लगाया और आशीर्वाद देते हुए, सावधानी से जाने को कहा।

### मिशन पर दो यार

दोनों साथी घर से निकल पड़े। माँ दरवाज़े पर खड़ी होकर तब तक निहारती रही, जब तक वे दोनों आँखों से ओझल न हो गए। गली पार करके दोनों मित्र सड़क पर आ गए और सड़क पर कंधे से कंधा मिलाकर बाँयी ओर चलने लगे। दोनों ने चुप्पी साध रखी थी। तभी चुप्पी तोड़ते हुए अमजद ने कहा— यार किशनु! मुझे बहुत डर लग रहा है। मैं शायद प्रथम श्रेणी न प्राप्त कर सकूँ। किशनु ने भी एक पर्ची पर अपने जोड़े हुए अनुमानित अंक उसे दिखाए।

### चमत्कारी मशीन के पास

दोनों कम्प्यूटर सेंटर पहुँचे, वहाँ पर बहुत भीड़ थी। सभी लोग पर्ची पर अपने अनुक्रमांक लिखकर दे रहे थे और कम्प्यूटर ऑपरेटर बारी-बारी सबके परीक्षाफल देखकर बता रहा था। दोनों साथियों ने भी अपना-अपना अनुक्रमांक एक पर्ची पर लिखकर वहाँ जमा कर दिए।

### जाने क्या होगा

किशनु की बारी आने पर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। कम्प्यूटर ऑपरेटर ने उसके अनुक्रमांक डाले और बोला— क्या भाई! क्या कर दिया तुमने? किशनु पर मानो पहाड़ टूट पड़ा हो, उसने आँखें खोल दीं, माथे पर पसीने की बूँदें साफ झलकने लगीं, दिल धड़कने लगा, साँसें तेज़ चलने लगीं, मुख से शब्द नहीं फूट रहे थे। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला— क... क... क... क्या हुआ? बदले में कम्प्यूटर ऑपरेटर ने उसे कम्प्यूटर स्क्रीन की ओर खींचा और वहाँ इशारा किया जहाँ उसके प्राप्तांक दिखाई दे रहे थे— 85 प्रतिशत। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। प्रिंट निकलवाकर वह नंबर देखने लगा और बार-बार प्रतिशत जोड़ने लगा और वह इसी उधेड़बुन में खो गया।

### हो... डरने की क्या बात है!

तभी उसने अपने कंधों को झकझोरता हुआ महसूस किया। मुड़कर देखा तो अमजद हाथ में परीक्षाफल लिए कूद रहा था। उसने भी 83 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। दोनों साथी दौड़ते, उछलते, कूदते घर की ओर चल पड़े क्योंकि उन्हें अपनी माताओं को खुशखबरी जो देनी थी।

### आखिरी बात

आजकल द्वितीय श्रेणी में तो कोई विद्यार्थी पास ही नहीं होता है। अब 80 प्रतिशत प्राप्तांक तो साधारण विद्यार्थी भी पाता है, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की तो बात ही छोड़िए। क्या पहले विद्यार्थी अक्लमूढ़ हुआ करते थे? वाह रे! बोर्ड परीक्षाफल।

### वर्तमान परीक्षा प्रणाली में बदलाव की आशा

उक्त काल्पनिक कहानी से यह स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं बोर्ड परीक्षा व उसके मूल्यांकन में लचीलापन है। परंतु क्षमता-विभेद करना मुश्किल है। परीक्षा को मशीनी प्रक्रिया से बाहर निकालकर उसमें

मौलिकता, तर्कक्षमता और सृजनात्मकता के अवसर बढ़ाने चाहिए। इससे यह उम्मीद की जा सकती है कि यह बदलाव शिक्षा पद्धति को पूर्णता प्रदान करेगा। नीति-निर्माता इस बात को स्वीकार करते हैं कि बच्चों को तनावमुक्त बनाए रखना शिक्षा की सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसके लिए परीक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। परीक्षाएँ वस्तुनिष्ठ व रचनात्मक सोच-विचार को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए।

परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र पूरी तरह रचनात्मक, आलोचनात्मक और विश्लेषण क्षमता की परख करने वाले हों अर्थात ऐसे प्रश्न हों जो किताबी ज्ञान तक ही सीमित न हों, बल्कि दक्षता और समझ आधारित प्रश्न हों। इस प्रकार के प्रयास परीक्षा प्रणाली को सुधारने की दिशा में सार्थक पहल होगी। साथ ही, मूल्यांकन प्रणाली पर भी विशेष ध्यान दिया जाए, मानक तय हों और मूल्यांकन शैली बदली जाए। वर्तमान में, बच्चों में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करने की दौड़ उन्हें रटंत विद्या में दक्ष बना रही है। यही नहीं, इस दबाव ने बच्चों में कई तरह की मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी पैदा कर दी हैं, वह कुंठित हो रहे हैं, तनाव का शिकार बन रहे हैं, जिससे उनकी मौलिक क्षमताएँ समाप्त हो रही हैं। वर्तमान परीक्षा प्रणाली जड़ होकर सिर्फ़ अंक प्राप्ति का खेल बनती नज़र आ रही है। इस दिशा में सुधार हेतु कुछ सम्भावित बिंदुओं पर ध्यान देना अपेक्षित है—

- विद्यालय आधारित आकलन को बच्चों के मूल्यांकन का आधार बनाया जाए।
- बोर्ड परीक्षाओं के लचीलेपन पर ध्यान दिया जाए और इस दिशा में सुधार हेतु सकारात्मक कदम उठाए जाएँ।
- सत्रांत परीक्षाओं के बोझ में कमी हो।
- प्रोजेक्ट आधारित गतिविधियों का सार्थक मूल्यांकन हो।
- समकक्ष (Peer Group) आकलन को प्राथमिकता दी जाए।

## *आर.टी.ई.एक्ट, 2009* और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

*शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009* के वास्तुकारों का मानना है कि आठवीं कक्षा तक स्कूली शिक्षा में बच्चों की प्रोन्नति स्वचालित होनी चाहिए अर्थात बच्चों का आकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली या विद्यालय आधारित आकलन पर आधारित हो, ताकि कोई भी बच्चा किसी बोर्ड परीक्षा या मूल्यांकन प्रणाली में असफल न हो। इस विश्वास का एक तर्क यह भी है कि बच्चे परीक्षा में असफलता से डरते हैं। इसलिए परीक्षाओं से बच्चों को मानसिक आघात पहुँचता है और कम उम्र में असफलता उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाती है। यह भी माना जाता है कि परीक्षाएँ स्कूलों से बच्चों के उच्च अनुपात में ड्रॉपआउट का कारण भी हैं। अगर हमें स्कूलों में विद्यार्थियों की उपस्थिति में सुधार करना है, तो हमें परीक्षाओं (जटिल परीक्षाओं) से दूर रहना होगा।

*आर.टी.ई. एक्ट, 2009* के अनुसार, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रिया लागू करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा जाए—

- संविधान में निहित मूल्यों से अनुरूपता;
- बालक का सर्वांगीण विकास;
- बालक के ज्ञान, अंतःशक्ति, योग्यता का निर्माण करना;

- अधिकतम सीमा तक शारीरिक और मानसिक योग्यताओं का विकास;
- बाल अनुकूल और बाल-केंद्रित रीति में क्रियाकलापों, प्रकटीकरण और खोज के द्वारा शिक्षण;
- शिक्षा का माध्यम बालक की मातृभाषा हो;
- बालक को भय, मानसिक आघात और चिंतामुक्त बनाना;
- बालक को स्वतंत्र रूप से मत व्यक्त करने में सहायता करना;
- बालक के समझने की शक्ति और उसे उपयोग करने की उसकी योग्यता का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करना;
- किसी भी बालक की प्रारम्भिक शिक्षा पूरी होने तक कोई बोर्ड परीक्षा आयोजित न की जाए; तथा
- प्रत्येक बच्चे को प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने पर एक प्रमाण-पत्र दिया जाए।

## सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए आकलन आवश्यक है। यह विभिन्न पणधारकों की कई तरह से सहायता कर सकता है। आकलन से विद्यार्थी कितना सीख रहे हैं यह पता लगाया जाता है; अध्यापक, प्रशिक्षक, अभिभावक तथा नीति-निर्माता बच्चों के विषय में सार्थक निर्णय ले सकते हैं। इसी क्रम में विभिन्न नीतिगत दस्तावेज़ों ने मूल्यांकन की विद्यालय आधारित पद्धति में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अनुशंसा की है। बच्चों को अच्छी शिक्षा देने और उनका सर्वांगीण विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि उनके सीखने के क्रम का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हो। इस प्रकार के मूल्यांकन से निम्न बातों में विशेष सहायता मिल सकेगी—

- बच्चे की सीखने की प्रक्रिया और उसके विकास में हुए परिवर्तन का पता लगाकर उसकी पहचान करना।
- ये पता लगाना कि प्रत्येक बच्चे को सीखने में कहाँ और कैसी सहायता की आवश्यकता है?
- बच्चों की ज़रूरत के अनुसार सीखने-सिखाने की योजना तैयार करना जिससे उन्हें सहायता मिल सके।
- आकलन के डर को दूर करते हुए बच्चों को लगातार सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- बच्चे प्रतिदिन क्या नया सीख रहे हैं? का पता लगाना।
- ये ज्ञात करना कि बच्चों के सीखने का सतत ग्राफ क्या है, जिससे अध्यापक अपनी शिक्षण-अधिगम योजना में अनुकूल परिवर्तन कर सकें।
- बच्चों के अधिगम विकास के बारे में उनके अभिभावकों को साक्ष्य प्रदान करना तथा उन्हें भी इस प्रक्रिया में शामिल करना।
- यह भी पता लगाना कि पाठ्यचर्या पर आधारित सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पा रही है; तथा
- बच्चों में सीखने और विकास की प्रक्रिया में पाई गई कमियों को दूर करने के प्रयास करना।

## *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* एवं मूल्यांकन

*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुसार स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्रीय अधिगम समग्र,

एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर होना चाहिए। विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु प्रयास किए जाएँ। सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षण विधि का समग्र आधार बिंदु, शिक्षा प्रणाली को रटने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना हो। शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशलों में सक्षम करना हो। अनिवार्य अधिगम और आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को कम किया जाए। अनुभव-आधारित अधिगम पर बल दिया जाए। कोर्स के चयन में लचीलेपन के माध्यम से विद्यार्थियों को सशक्त बनाया जाए। विद्यार्थियों के विकास के लिए आकलन में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इस संबंध में कुछ बिंदु इस प्रकार हैं—

- नियमित रचनात्मक आकलन की व्यवस्था हो;
- आकलन का वास्तविक उद्देश्य बच्चों को सिखाना हो;
- इसमें स्व-मूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन, प्रोजेक्ट कार्य, खोज आधारित अध्ययन में प्रदर्शन, क्विज, रोल प्ले, समूह कार्य, पोर्टफोलियो आदि मूल्यांकन शामिल हों;
- बोर्ड परीक्षा और प्रवेश परीक्षा में रचनात्मक बदलाव किए जाएँ;
- अधिक लचीलापन विद्यार्थियों के अवसरों को छीन रहा है। इसे समायोजित करने की दिशा में काम होना चाहिए; तथा
- विद्यालय आधारित आकलन की लचीली प्रक्रिया व दक्षता आधारित शिक्षा को लागू किया जाए।

## निष्कर्ष

उक्त चर्चा का निष्कर्ष यह है कि बोर्ड परीक्षाओं में दोष या मूल्यांकन पद्धति में कमियों से बच्चों का वास्तविक अधिगम बाधित हो रहा है। जिससे वे आगे बहुत अच्छा (जितना वे कर सकते हैं) प्रदर्शन नहीं कर पाएँगे। हमें इस दिशा में समय-समय पर आए नीतिगत दस्तावेज़ों की अनुशंसाओं का अनुपालन सुनिश्चित करना होगा, ताकि बच्चों के सुनहरे भविष्य को सँवारा जा सके।

## संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

———. 2020. *सतत एवं व्यापक मूल्यांकन*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.